हाँ! तुम केवल श्रध्दा हो..

समर्थ नारी गौरव

पिंकी परुथी 'अनामिका'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

पिंकी परूथी "अनामिका"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-22-6

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - पिंकी परूथी "अनामिका" 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY PINKI PARUTHY 'ANAMIKA'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

संस्कृत में एक श्लोक है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।

जिस कुल में नारियों की पूजा, अर्थात सत्कार होता हैं, उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, उनकी सब क्रिया निष्फल हैं। शास्त्रों के अनुसार भी नारी श्रद्धा के योग्य है। पूजनीय है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदपि गरीयसी।

अर्थात, जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

माता गुरुतरा भूमेरू।

अर्थात, माता इस भूमि से कहीं अधिक भारी होती हैं।

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।।

अर्थात, माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई सहारा नहीं है। माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय चीज नहीं है।

मातृ देवो भवः।

अर्थात, माता देवताओं से भी बढ़कर होती है।

उसी तरह नारी उस दैविय शक्ति का अंश मानी गयी है जिन्हें संसार दुर्गा,काली,लक्ष्मी और जगदम्बा आदि नामों से जानता है

ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।

यह है हमारी संस्कृति, भारत की संस्कृति, जिसमें नारी को उच्च स्थान दिया जाता था।

जयशंकर प्रसाद जी की रचना नारी पर हृदयतल पर अंकित है,

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहाँ के नारी वर्ग की स्थिति को देखकर सरलता से लगाया जा सकता है। जिस देश में नारी को देवी का स्थान दिया जाता था, पूजनीय और शक्ति का स्त्रोत माना जाता था, वो संस्कृति कितनी उच्च, और अनुकरणीय होगी।

कालान्तर में नारी की स्थिति शोचनीय हुई। लगातार हुए बाहरी आक्रमण, तत्पश्चात अंग्रेजी शासन के समय उसे दुर्बल, दयनीय, दबा हुआ बना दिया गया। उपभोग की वस्तु समझ, संवेदनहीनता के साथ अत्याचार किया गया।

मैथिलीशरणगुप्त जी ने अपने काल में बहुत भावपूर्ण अभिव्यक्ति की,

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

फिर कुछ समाज सुधारक आए और परिवर्तन का क्रम चला। कभी कैसी कभी कैसी स्थति का सामना करती ही आई है नारी। पर नारी शब्द दिमाग में आते ही अपने आप आ जाता है,,, तुम श्रद्धा हो। चलिए अब वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखते हुए आगे बढें, शीर्षक को सार्थक करें, जिससे यह जानें कि, क्या सच में नारी श्रद्धा है? मेरे लिए तो हाँ।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

शिव की शक्ति, कृष्ण की राधा, राम की सीता, अहिल्या, यशोदा, लक्ष्मी, सावित्री, कौशल्या, देवी के नौ स्वरूप आदि नारी के भिन्न भिन्न गुणों की साक्ष्य हैं। त्याग, समर्पण, ममता, वात्सल्य, प्रेम, संवेदनशीलता, नारी के स्वाभाविक गुण हैं, किसी के द्वारा थोपे नहीं गये हैं।

प्रकृति को ही लें, सूर्य की आभा, रश्मियाँ सूर्य को तेजवान और पूजनीय बनाती हैं। चाँद की चाँदनी और शीतलता ही उसे कान्तिमान बनाती है।

नदियों की उदारता, गतिशीलता, सहनशीलता ही उसे पावन बनाती हैं, मिट्टी को अन्नदात्री, भूमि को सम्पदा से भरपूर। इस रूप में (प्रकृति) भी स्त्री श्रद्धा के योग्य है।

स्त्री का शरीर पुष्प सा कोमल और हृदय दया का सागर होता है। कुछ चंचलता, कुछ भोलापन, कुछ बड़बोलापन, कुछ चपलता उसे आकर्षक बनाते हैं।

बालरूप में, यौवना में, महिला रूप में और वृद्धा रूप में भी, स्त्री पूजनीय है, इसीलिए कवि कह गए, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

बालपन में उसकी मीठी तोतली बोली सबका मन मोह लेती है, गुड़िया रानी गुड्डे-गुड़िया के खेल में जाने क्या क्या सपने और कहानियाँ बुनती है। उसे पता भी नहीं होता कि वो सारे सपने पूरे होंगे कि नहीं। पिताजी सब दिन भर काम करके शाम को आते हैं तो बिटिया को देख सारी थकान भूल जाते हैं। भाई को राखी बाँधती है, भाई दूज पर तिलक करती है तो परिवार खुशियाँ मनाते हैं। माँ की तो जैसे पक्की सहेली ही बन जाती है बेटी। उसके अनन्य रुप देखकर तो अनायास ही उसके प्रति श्रद्धा का भाव पैदा हो जाता है।

पर कैसे कहूँ नारी तुम केवल श्रद्धा हो, जब इतनी मासूम, भोली बच्ची को भी हवस का शिकार बना दिया जाता है, जिसे नवरात्रि में देवी मानकर पूजते हैं। थोड़ी और बड़ी होने पर, भैया-दीदी के साथ मस्ती, लड़ाई झगड़ा, खेलकूद और पढ़ाई। पढ़ाई में भी बहुत बुद्धिमान और कुशाग्र। पर ये क्या, कि उसकी पढ़ाई बीच में ही रोक दी जाती है। कैसे कहूँ कि नारी तुम केवल श्रद्धा हो। नवयौवना की तो बात ही अलग, पूरे परिवार की आन, बान और शान, घर की रौनक,

खिलखिलाहट, जगमगाहट, खुशी-खुशी डोली में बिठाई जाती है, जाने क्या-क्या सपने अपने भविष्य को लेकर पिता का घर छोड़ चल देती है, लेकिन यह क्या कि, दहेज के लालच में बलि चढ़ा दी जाती है, रौंद दी जाती है। तब कैसे कह सकते हैं कि नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

बच्चे को जन्म देती है, लड़का हो या लड़की, असहनीय पीड़ा सहन कर, तनिक सुख और खुशी की लालसा लिए, पर फिर बेटी होने पर कितने ताने और अत्याचार सहन कर जाती है।

कैसे कहूँ कि नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

वृद्धा तो और भी लाचार। पूरी जवानी लगा देती है, अपने बच्चों को बड़ा करने में, शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन जुटाने में। अंत में वृद्धाश्रम नसीब होता है। तब कैसे कह पाऊँगी कि नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

क्या एक, स्त्री, महिला या नारी होना ही उसके लिए अभिशाप है, जो स्वयं पुरुष को जन्म देती है। कदापि नहीं, स्त्री तो वरदान है सृष्टि के लिए। सृष्टि को चलायमान रखने के लिए, गति, शक्ति, ऊर्जा, सुख और शान्ति देने के लिए, स्त्री का होना उतना ही आवश्यक है जितना कि जीवन के लिये श्वास का। स्त्री जीवन का आधार और प्रेम का पर्याय है। स्त्री का महत्व वो ही समझ पाएगा, जिसने अपनी माँ, बेटी, पत्नी और बहन को अच्छे से समझा होगा, तो फिर वह अवश्य कहेगा कि नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

स्त्री जितनी दयालु है, उतनी ही शक्तिशाली भी, जितनी कोमल है, उतनी कठोर भी, जितनी शान्त है, उतनी ही रुद्र भी। यह तो वह अपनी ही कोख का सम्मान करती है, सभ्यता का मान रखती है, नैतिकता का ध्यान रखती है, इसलिए सहनशीलता बनाए रखती है, मौन रह जाती है।

नारी और पुरुष समाज का अभिन्न अंग हैं। सृष्टि ने दोनों को एक दूसरे का पूरक बनाया है। विवाह का गठबन्धन इस सम्बन्ध को और प्रगाढ़ बनाता है। गाड़ी के दो पहिये जैसे गाड़ी को गति देते हैं, वैसे ही गृहस्थ जीवन में, पति-पत्नी आपसी सहमति और सामन्जस्य से घर सुचारु रूप से चलाते हैं। अपनी बुद्धि और विवेक से, वे दोनों क्षमताओं का विस्तार करते हैं, और बच्चों का विकास करते हैं।

कुछ दृश्य हैं भिन्न-भिन्न जो हमें यह सोचने पर विवश कर देंगे कि समाज की वास्तविक स्थिति क्या है?

दृश्य 1- एक आठ नौ साल की लड़की, किसी सुनसान जगह अकेली खड़ी थी, कोई गाड़ी आकर इसलिए रुकी कि पूछ लें, यहाँ कैसे खड़ी हो। एक सभ्य पुरुष गाड़ी से उतरकर उसके पास आते हैं, लड़की अपनी फ्रॉक ऊपर कर लेती है।

दृश्य 2- चार साल की बच्ची, विद्यालय से घर आकर कहती है, मम्मी आप ही स्कूल छोड़ने चला करो, ऑटो वाले अंकल बहुत जोर से प्यार करते हैं, मुझे अच्छा नहीं लगता।

दृश्य 3- बीस साल की लड़की उम्र में बीस साल बड़े पुरुष से शादी के लिए हाँ कर देती है, क्योंकि उसकी बड़ी बहन पर तेज़ाब डाल दिया गया था।

दृश्य 4- आठ साल की बच्ची कहती है मुझे लडकों के कपड़े पहना दो, और कटिंग करा दो, फिर बस में कोई मुझे छुएगा नहीं।

दृश्य 5- रक्तस्राव के दिनों में भी उससे घर का पूरा काम कराया जाता है भले ही उसे कितनी ही पीड़ा और परेशानी हो रही हो।

यह सारे दृश्य कोई झूठी कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि सत्य घटनाएँ हैं, और भी जिनकी कल्पना भी नहीं की सकती, और या कि रौंगटे खड़े हो जाएँ। जिसमें सबसे खतरनाक मानव तस्करी है। लड़कों को गुलाम और लड़कियों को सेक्स वर्कर बना दिया जाता है। अंगों को निकालकर बेच दिया जाता है। गंदी तस्वीरें और विडियो बनाए जाते हैं, लव जेहाद एक नया प्लान चल रहा है, धर्म परिवर्तन और शादी, फिर अत्याचार, बाल विवाह लड़की को पनपने ही नहीं देता। किडनैप कर पैसा कमाया जाता है और भी न जाने क्या क्या।

है ना दिल को चुभने और दुःखी करने वाली बात। तब कैसे कह पाऊँगी कि नारी तुम केवल श्रद्धा हो। इसलिए सतर्कता रखनी बहुत आवश्यक है, काम करें बेटियाँ, आगे भी बढें, कीर्तिमान स्थापित करें, पर सतर्क रहें।

सिक्के के दो पहलू होते हैं, दूसरा पहलू यह है कि, ऐसा नहीं है कि समाज में कुछ अच्छा नहीं हो रहा है, लड़कियाँ आज कौन से क्षेत्र में आगे नहीं हैं और सराहनीय कार्य नहीं कर रही हैं। राजनीतिक, सामाजिक, सरकारी, गैर सरकारी, कानून, न्याय, सेना के तीनों अंगों में, इंजीनियरिंग, मेडिकल, व्यवसाय, शिक्षा और लगभग सभी क्षेत्रों में पुरुष के समान कार्य कर रही हैं। आज से नहीं बहुत पहले से ही, मैडम क्यूरी, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, चाँद बीबी, मदर टेरेसा, कल्पना चावला, सुषमा स्वराज, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, लता मंगेशकर, सानिया मिर्जा, सायना नेहवाल, सू की, सरोजिनी नायडू, हिमा दास, इंदु मल्होत्रा, देबजनी घोष,नेहा नारखेडे, गीता गोपीनाथ, मैरी कॉम, अवनि चतुर्वेदी, अरुणा रेड्डी, दिव्या सूर्यदेवरा, कोमल मंगतानी, ऐश्वर्या राय बच्चन, सुष्मिता सेन, प्रियंका चोपड़ा, कंगना राणावत, श्रेया घोषाल,,,, आदि आदि बहुत सी अन्य महिलाओं ने भिन्न भिन्न क्षेत्रों में जैसे, स्वतंत्रता आन्दोलन, समाज सुधारक, साफ्टवेयर, इंजीनियरिंग, मेडिकल साइंस, गायन, ऐक्टिंग, स्टेज, व्यापार, बैंकिंग, एंटरप्रेन्योरशिप, राजनीति, खेलकूद, साहित्य और लेखन आदि में महिलाओं का, देश का नाम रौशन किया है। इतना शौर्य और पराक्रम है कि लिखते लिखते हाथ थक जाएँ।

फिर भी समाज के कुछ ठेकेदार उसे कमजोर साबित करके, फिर सशक्तिकरण की बात करते हैं। बात जब सशक्तिकरण की हो तो होना चाहिए, मानव सशक्तिकरण,

युवा विमर्श, समाज विमर्श, देश विमर्श एवं सशक्तिकरण, सेना सशक्तिकरण, संस्कृति और सभ्यता सशक्तिकरण, पुरातत्व सशक्तिकरण, पर्यावरण सशक्तिकरण, भाषा सशक्तिकरण, राजनीति सशक्तिकरण, संसाधन सशक्तिकरण, कला और अभिव्यक्ति सशक्तिकरण आदि आदि।

क्या यह सब मुद्दे आवश्यक नहीं हैं जिन पर चर्चा हो। नारी सशक्तीकरण की क्या आवश्यकता है। उसे समाज से अलग क्यों समझा जाए। हाँ पुरुष की नैतिक जिम्मेदारी है नारी की सुरक्षा की।

नारी सदैव ही पुरुष की पूरक एवं अभिन्न अंग है। इसी तरह पुरुष भी नारी के पूरक एवं अभिन्न अंग हैं। उसे नारी को केवल अपनी मौज मस्ती का सामना न समझकर, अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिए कि, उसकी सुरक्षा पुरुष का धर्म है।

नारी नैसर्गिक रूप से कोमल और भावुक होती है। लेकिन दूसरी तरफ पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर साथ देने के साथ-साथ उसने पुरुष को प्रतिद्वंदी ही समझ लिया। फलस्वरूप कई कठोर और गलत फैसले भी लिए, जिसका परिणाम परिवार का बिखराव ही रहा।

कई बार तरक्की, उन्नति, प्रगति, करियर सेट करने के लिए, शॉर्ट कट अपनाने के कारण उसके शरीर का इस्तेमाल किया गया, वह शोषित भी की गई। होना यह चाहिए कि परिश्रम, प्रयास और एकाग्रता के साथ लक्ष्य हासिल किया

जाए, चाहे लड़का हो या लड़की। समान शिक्षा का अधिकार, समान नौकरी आ अधिकार, समान वेतन का अधिकार प्राप्त हो तो कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी अलग से सशक्तिकरण की।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, महिला ही महिला को अशक्त बनाना छोड़ दे। जी हाँ, यह भी एक कटु सत्य है कि महिला ही महिला की दुश्मन होती है। सुनने में बुरा अवश्य लगता है, पर यह सत्य है। इसके लिए बहुत दूर नहीं जाना पड़ता, सब अपने-अपने घरों में झाँककर देखें और अपने-अपने दिलों में भी।

आइने की तरह साफ छवि दिख जाएगी। किसने किसको पीछे धकेला, किसने किसको नीचा दिखाया, किसने किसको अपमानित किया, किसने किसके घर में आग लगाई, किसने किसके लिए जाल बिछाया।

किसी टी वी सिरियल की बात नहीं है, वास्तविकता यही है, कि अस्सी प्रतिशत केसेस में महिलाओं ने ही महिलाओं को पीछे धकेलने का काम किया। उस पर अत्याचार किया। जबकि एक महिला ही महिला की भावनाओं को अच्छे से समझ सकती है। घर में चलती हुई राजनीति के कारण लड़की को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। मानवीयता का क्षरण, रिश्तों में स्वार्थ की गंध, संवेदनशीलता का हरण और दिखावे के जीवन जीने में नारी और पुरुष दोनों का ही जीवन डाँवाडोल रहता है। सहनशीलता की हर जगह कमी है, लोग बोलते कुछ हैं, दिखते

कुछ और हैं, और करते कुछ और हैं। उनके आचार और व्यवहार में कोई समानता नहीं है। कोई किसी पर विश्वास नहीं कर पाता, करे भी कैसे? संशय ही संशय है। मैं उन महिलाओं को कदापि इस श्रेणी में नहीं ला रही जो वास्तव में महिलाओं के लिए कार्य कर रही हैं।

समाज को ठीक करने से पहले सभी अपने-अपने घरों को ठीक करें। समाज अपने आप व्यवस्थित हो जाएगा। सास और नन्द जिस दिन बहू के लिए बेटी के समान भावना जागृत करेंगी, पति पत्नी को इज्जत का दर्जा देगा, सहयोग की भावना रखेगा, माता-पिता बेटी के साथ बर्ताव वैसा ही करेंगे जैसा बेटे के साथ करते हैं, पडोसी एक दूसरे का विश्वास करेंगे, रिश्तों में मर्यादा और प्रगाढ़ता आयेगी, सच मानिये किसी भी सशक्तिकरण के अभियान की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

कुछ शिष्टाचार की और नैतिकता की जिम्मेदारी लड़कियों अथवा नारियों की भी है। नारी पुरुष की पूरक है प्रतिद्वंद्वी नहीं। लेकिन प्रतियोगिता के इस युग में, नारी अपने प्राकृतिक गुणों को भूलकर अंधी दौड़ में शामिल हो गई है। उसे यह भी भलीभाँति समझना चाहिए कि यदि वह घर का काम अच्छे से कर रही है, बच्चों की देखभाल अच्छे से कर रही है, तो वह वास्तविक विजेता है, न कि घर को अस्त व्यस्त करके, बच्चों की परवरिश सही तरीके से नहीं करके यदि वह कुछ हासिल भी कर लेती है, तो भी वह सब कुछ खो रही होती है। बच्चों को जो स्नेह, अपनापन और स्पर्श जो

माँ से मिल सकता है, वो और किसी से नहीं। स्तनपान न कराकर, ऑफिस की ड्यूटी को प्राथमिकता दे भी देती है तो को बड़ा काम नहीं कर रही। परिवार की लाचारी और मजबूरी नहीं है तो निश्चित रूप से उसे अपने घर को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

करियर आगे भी बढ़ाना चाहती है तो सामन्जस्य बिठाकर ही। वैसे कोई भी माँ अपने बच्चे के लिए बेस्ट से बेस्ट करना चाहती है। ईश्वर ने उसे यह शक्ति भी दी है कि वह सारे रिश्ते, सारे काम, एक साथ करने में सक्षम है। उसे आत्मरक्षा के गुर भी सीखने होंगे। आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना होगा।

हो सकता है कि आज की नारी, मेरे कतिपय विचारों से सहमत न हो, या थोड़े दकियानूसी से लगें। पर यह सत्य है कि यदि परिवार सुरक्षित रहेंगे तो ही समाज सुरक्षित होगा, समाज सुरक्षित होगा तो देश, देश और दुनिया सुरक्षित होंगे तो ब्रम्हाण्ड। अपने वर्चस्व की लड़ाई, समानता के अधिकार की लड़ाई के लिए पूरे विश्व की महिलाएँ एक साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाती हैं। सभी महिला मित्रों को आने वाले महिला दिवस (8 मार्च 2021) की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई भी इस लेख के माध्यम से। चूँकि समस्याएँ हर जगह यानी पूरी दुनिया में लगभग एक जैसी ही होती हैं, महिलाओं की एक ही तरह की समस्याएँ थीं, जिसके लिए आन्दोलन की आवश्यकता पड़ी और इसकी शुरुआत

जर्मनी से हुई। 19 वीं सदी तक आते आते महिलाओं ने अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता दिखानी शुरू कर दी। अपने अधिकारों को लेकर सुगबुकाहट पैदा होने के बाद 1908 में 15000 स्त्रियों ने मतदान के अधिकार के माँग की दुहाई लगाई, अच्छे वेतन की माँग, कार्यों के घंटे कम करने की माँग की अर्जी भी लगाई, और मार्च निकाला। यू एस में 28 फरवरी 1909 को पहली बार राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव जर्मनी की क्लारा जेडकिंट ने 1910 में रखा। एक सम्मेलन रखा गया जिसमें 17 देशों की 100 महिलाओं ने भाग लिया और अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने पर अपनी सहमति दी। 19 मार्च 1911 को ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी, स्विट्जरलैंड में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। उसके बाद 1913 में इसे बदलकर 8 मार्च कर दिया गया। 1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने पहली बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। हर वर्ष महिला दिवस को एक वार्षिक थीम के आधार पर मनाया जाता है। सबसे पहले अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को जो थीम दी गई थी उसका नाम, 'सेलिब्रेटिंग द पास्ट, प्लानिंग फॉर द फ्यूचर' था। इस वर्ष इसे 'चूस टू चैलेंज' थीम से मनाया गया। इसकी सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब इसका महत्व समझा जाएगा। वरना इसे मात्र औपचारिकता के समारोह, और सम्मान समारोह तक ही रखा जाएगा।

जिस दिन नारी निडर होकर घर से निकलेगी, देवी रूप को पूजने वाले, सचमुच में छोटी-छोटी बच्चियों की रक्षा कर पाएँगे, औरत को शरीर से नहीं बल्कि उसकी शक्ति से पहचाना जाएगा, उसे केवल उपभोग की वस्तु न समझकर गर्व और अभिमान से घर की शोभा माना जाएगा, उसकी प्रतिभा का विकास कर, समाज का विकास माना जाएगा।

तब...

सर्वे भवन्तु सुखिना:, सर्वे सन्तु निरामया।

इसी भावना के साथ, कहूँगी कि....

नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

पिंकी परूथी "अनामिका"

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

पिंकी परुथी
'अनामिका'

संत ही है स्त्री

सभी कहते हैं,
संत होना, सरल नहीं।
त्याग,
तपस्या,
स्नेह,
सद्भावना,
प्रेम,
उदारता,
हृदय की विशालता,
सभी को सम्मान देना,
क्षमा करना,
शालीनता,
शिष्टाचार,
शीलता,
क्रोध को दबाना,
मृदुल व्यवहार,
आदि गुणों को विस्तारित करना पड़ता है।
पर क्या ये सारे गुण,
एक स्त्री को,
परिभाषित नहीं करते।
तो मैं,
हर स्त्री को,
संत मानती हूँ।
एक कर्तव्यनिष्ठ ,कर्मशील संत।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
मूल्य 50/–
978-93-90995-22-6